Raj Express (Indore), 28th March 2025, Page-04

आईआईटी इंदौर के अध्ययन से अदृश्य प्रदूषक का खुलासा

मध्य प्रदेश में बढ़ते वायु प्रदूषण से लोगों में कई तरह की गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं उपजीं

● इंदौर/ राज न्यूज नेटवर्क

आईआईटी इंदौर ने एक अध्ययन किया। सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर मनीष कुमार गोयल और उनकी टीम की ओर से हाल ही में किए गए अध्ययन में पिछले चार दशकों (1980-2023) में भारत में अत्यधिक वायु प्रदूषण के कारण होने वाले बढ़ते स्वास्थ्य जोखिमों पर देखा गया। एल्सेवियर द्वारा प्रतिष्ठित टेक्नोलॉजी इन सोसाइटी जर्नल में प्रकाशित, इस अध्ययन में ब्लैक कार्बन, ऑर्गेनिक कार्बन, सल्फेट्स, धूल और सी स्प्रे सहित मानव निर्मित और प्राकृतिक स्त्रोतों से होनी वाली प्रदूषण की प्रवृत्तियों की जांच की गई है। यह इस बात पर केंद्रित है कि ये प्रदूषक सार्वजनिक स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करते हैं, खासकर मध्य प्रदेश में। पीएम 2.5 का मतलब हवा में मौजूद 2.5 माइक्रोमीटर से भी छोटे कणों से है, जो फेफड़ों और रक्तप्रवाह में प्रवेश कर

सकते हैं और श्वसन संबंधी बीमारियों, हृदय संबंधी समस्याओं और तंत्रिका संबंधी विकारों का कारण बन सकते हैं। ये प्रदूषक आंधी और सी स्प्रे जैसे प्राकृतिक स्त्रोतों के साथ-साथ फ्यूल कम्बशन, बायोमास बर्निंग और औद्योगिक उत्सर्जन जैसी मानवीय गतिविधियों से आते हैं। यह अध्ययन पीएम 2.5 के प्रभाव का गहन विश्लेषण प्रदान करता है, विशेषकर उन दिनों में जब प्रदूषण खतरनाक स्तर तक पहुंच जाता है।

नहीं कर सकते नजर अंदाज

आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी ने इस बात पर जोर दिया कि, मध्य प्रदेश में दिल्ली और उत्तर प्रदेश की तुलना में प्रदूषण का स्तर कम है, लेकिन पीएम 2.5 कांसेंट्रेशन (सांद्रता) की बढ़ती प्रवृत्ति और इसके गंभीर स्वास्थ्य प्रभाव, विशेष रूप से महिलाओं पर, को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। यह निष्कर्ष भविष्य में स्वास्थ्य संकटों को रोकने के लिए, विशेष रूप से अति संवेदनशील आबादी के बीच, बेहतर वायु गुणवत्ता प्रबंधन की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

यह हैं आंकड़ें

अध्ययन में सार्वजनिक स्वास्थ्य पर वायु प्रदूषण के प्रभाव की भी जांच की गई। विशेष रूप से महिलाओं पर, जो ठोस ईंधन से खाना पकाने के कारण घर के अंदर होने वाले प्रदूषण और श्वसन संक्रमण के उच्च जोखिम के कारण अधिक असुरक्षित हैं। श्वसन संबंधी रोग, तंत्रिका संबंधी विकार, श्वसन संबंधी दीर्घकालीन बीमारियां और हृदय संबंधी रोग पुरुषों और महिलाओं दोनों में प्रचलित हैं। श्वसन संक्रमण और तपेदिक के मामले पुरुषों में 40,000-60,000 और महिलाओं में 35,000-55,000 तक हैं। तंत्रिका संबंधी विकार 2,000-3,000 पुरुषों और 1,800-2,800 महिलाओं को प्रभावित करते हैं, जबकि श्वसन संबंधी दीर्घकालीन बीमारियां 20,000-30,000 पुरुषों और 18,000-28,000 महिलाओं को प्रभावित करती हैं। हृदय संबंधी बीमारियां भी आम हैं, जिनमें पुरुषों में 40,000-50,000 और महिलाओं में 35,000-45,000 मामले हैं। थोड़ी कम निरपेक्ष संख्या के बावजूद, घर के अंदर और बाहर दोनों तरह के प्रदूषण के लंबे समय तक संपर्क में रहने के कारण महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी गंभीर समस्या का सामना करना पड़ता है।